Name:- Ashita Baranwal

Class:- IX

<u>भूख की जंग</u>

हामिद, उम्र दस साल, लापता

चेहरा जैसे फरिश्ते का अक्श हो

या मेरे पडोस में रहने वाला कोई जाना पहचाना शक्श हो। वह शाम भी कुछ संगीन नहीं थी,

हामिद रोज घर की पीछे वाली गली में खेलने जाता,

और रात ढलने से पहले अपनी मां की आंखों के आगे आ जाता।

पर उस शाम वो लौटा नहीं,

उसके परिवार वालों ने इतना गंभीर होकर इस बात को सोचा नहीं।

घर का रास्ता भूला हुआ यह बालक पहले कभी अपनी मां से बिछड़ा था नहीं,

हर गली को घर तक पहुंचाने वाली दिशा बता रहा था,

जो पहले इन बुरे हालातों से गुजरा नहीं,

अब हर उस अजनबी शक्श से अपने आपको बचा रहा था।

सहमा घबराया वह बच्चा आखिर स्टेशन की सीढ़ियों पर जाकर ठहरा,

फिर लगभग एक महीने तक वही बन गया उसका बसेरा।

हर बीते महीने उसके लिए भारी पड़ता गया,

खाने का बंदोबस्त करने वाला हर वह नौजवान पालन हारी बनता गया।

ऐसे दुर्भाग्य के समय साहस टूट जाता है भगवान पर भरोसा छूट जाता है,

पर उस अबोध का साहस अब तक टिका हुआ था,

कोई ख्वाहिश ना थी मन में फिर भी जीने का आश जगा हुआ था।

अंतर्मन से लड़ते हुए वह बच्चा हुआ बड़ा

संपूर्ण समाज के आगे उदाहरण बन हुआ खड़ा

काम की तलाश करता हामिद एक रेडियो जॉकी बन गया

कुर्सी पर बैठे उसने लाखों बच्चों की बातें की बयां

लापता बच्चों को उनके परिवार से उसने मिलाया

जो लगता था नामुमकिन सच में कर दिखाया।

हमें समझना होगा कि सरहद पर छेड़ा हुआ जंग ही एकमात्र जंग नहीं होता है,

जब भी एक बच्चा सड़क पर भूखे सोता है।

तब एक संघर्ष की किरण ही उसे बचा कर रखती है,

मन में पनपती हिम्मत और उम्मीद ही उसे देती जीने की शक्ति है।

अगर हामिद जैसा संपूर्ण जगत वेल्लोर होता ।

तो आज शायद भारत में किसी घर का बालक भूखे ना सोता।